सत्सन्देश

श्री स्वामी चिदानन्द

अनुवादिका

श्रीमती आशा गुप्ता

प्रकाशक

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पत्रालय : शिवानन्दनगर २४९१९२

जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड (हिमालय), भारत

www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org

प्रथम संस्करण : २०१४

(१,००० प्रतियाँ)

द डिवाइन लाइफ ट्रस्ट सोसायटी

निःशुल्क वितरणार्थ

'द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्दनगर' के लिए
स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाशित तथा उन्हीं के द्वारा 'योग-वेदान्त
फारेस्ट एकाडेमी प्रेस, पो. शिवानन्दनगर २४९१९२,
जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड' में मुद्रित।
For online orders and Catalogue visit : dlsbooks.org

ब्रह्मलीन परम पावन
श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज द्वारा
पवित्र पर्वों एवं विशिष्ट शुभ अवसरों पर दिये गये
प्रवचनों का सार-संग्रह

विषय सूची

१. ईश–अनुग्रह और हमारा प्रयास ५

२. सर्वोच्च आदर्शवादिता की जागृति ७

३. अतुलित बल तथा विनय सम्पन्नता ११

४. अन्तः परिवर्तन १३

५. शाश्वत सत्य की पुष्टि १५

६. दिव्य अवतरण १८

७. मंगल शुभारम्भ २१

१

ईश-अनुग्रह और हमारा प्रयास

हमारे जीवन में प्रचुर मात्रा में ऐसे कितने ही सकारात्मक पक्ष हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इसे जान कर हमारा मन गौरवान्वित और उन्नत हो जाता है। हमारा मन उत्साह की भावना, सकारात्मकता और आशावादिता से भर उठता है। हम आत्म-विश्वास और दृढ़-निश्चय से कह उठते हैं ''जब ये सारे बल मुझे सबसे ऊपर उठाने के लिए तत्पर हैं, तो क्यों नहीं मुझे भी उसी दिशा में और अधिक बल का प्रयोग आत्म-प्रयास के रूप में, साधना के रूप में करना चाहिए। इन दूसरी शक्तियों को सहयोग देने के लिए मुझे तो केवल इतना ही करना है। जो मेरी भलाई, मेरे सर्वोच्च लाभ के लिए इतना सब कर रहे हैं, मुझे भी पीछे रह कर शान्त नहीं बैठना है। मुझे भी सक्रिय रह कर ऊर्ध्वगामी हो कर ईश्वर की ओर जाने की गति को, अपनी मुक्ति पाने की गति को अपने जीवन में प्रकट होते हुए देखना चाहिए।''

हमारी कुशलक्षेम के लिए पूर्ण रूप से गहराई के साथ श्रेष्ठतम कल्याण के लिए प्रभु पूर्ण रूप से हमारे हैं। उन्हें पूरी तरह से हमारी चिन्ता, पूरा प्रेम, पूरा लगाव है। हमारे लिए जो-कुछ भी अशुभ है, वे उस सबको दूर करने वाले हैं। इसीलिए वे कहते हैं कि जब ऐसा महत्त्वपूर्ण समय है, इतनी अधिक मात्रा में कृपा की वर्षा हो रही है जो हमारे लिए सबसे हितकर है, तो हम भी अपने प्रयत्न को इसके साथ जोड़ दें। इसलिए आगे बढ़ कर

कृपा के सहारे, गुरु-कृपा के आशीर्वाद से अपनी सबसे सर्वोच्च भलाई और सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त कर लें। यही हमें करना चाहिए।

अब हम हिन्दू धर्म के नव-वर्ष के शुभारम्भ की इस सौभाग्यशाली घड़ी में हैं। नये शुभारम्भ के लिए अवश्य ही नव-वर्ष का श्रीगणेश बड़ा ही उपयुक्त, अनुकूल और हितकर होगा। हम भी यथार्थ में ऐसा ही कर सकते हैं। हम भी एक नया शुभारम्भ करके अधिक-से-अधिक आदर्श जीवन व्यतीत करें।

आदर्श जीवन व्यतीत करते-करते मानव अकस्मात् अनुभव करने लगेगा कि उसके सारे प्रयासों के पीछे ईश्वर की और गुरु की कृपा की असीम शक्ति कार्य कर रही है। दोनों की कृपा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। गुरु-कृपा ही ईश्वर की कृपा है जो गुरु के माध्यम से प्रकट हो रही है। इसलिए उन्हें प्रसन्न करने के लिए सच्चे मन से किया गया आत्म-प्रयास हमें परम सौभाग्यशाली बना देगा।

हमारे धर्माचार्यों ने आदेश दिया था कि **चान्द्र नव-वर्ष** के आरम्भिक नौ दिनों को निरन्तर ईश्वर का गुणगान, उनकी पूजा और प्रार्थनाओं में व्यतीत करना चाहिए। नौ अंक पूर्णांक है, उसके पश्चात् कोई और अंक नहीं आता, उसके पश्चात् तो अंकों को जोड़ कर ही संख्या-विस्तार होता है। सारा प्रस्तार और सम्मिश्रण इस रहस्यमय नौ अंक का संयोग ही है। इन नौ दिनों में हमारे पूर्वजों ने बड़ी बुद्धिमत्ता से निश्चय किया था कि हमें इस काल में उपवास, प्रार्थना, पूजा, ईश्वर का गुणगान, दिव्य नाम का गान और धर्मशास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए। इस प्रकार उन्होंने हमें सुस्पष्ट दिशा-निर्देश दिये थे जिससे हमारा पूरा वर्ष श्रद्धा के साथ कर्मठ हो कर धर्मशास्त्रों का पठन और आराधना से भरा हुआ रहे, जिससे

धर्मशास्त्रों में दी गयी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतार कर हम उस पथ पर चल सकें। इस प्रक्रिया से सारे वातावरण में भक्ति, आराधना, प्रार्थनाओं से भरी हवाएँ वातावरण में छा जायेंगी जिससे वह सभी जनों के लिए अब यहाँ तथा बाद में भी सर्वोच्च कल्याण में सहायक हो सकती हैं।

मानव-समुदाय के लिए हमारे पूर्वजों के मन में कितना उच्चकोटि का प्रेम था। उन्हें अपनी भावी सन्तति का कितना ध्यान था। उन्हीं के सार्वजनीन प्रेम और कृपा के माध्यम से ही उन्होंने नौ दिनों की ऐसी सुन्दर व्यवस्था की जिससे कि हम समझ सकें कि पूरे वर्ष-भर किस प्रकार का जीवन व्यतीत करने से, आध्यात्मिक विकास के पथ पर मनोयोगपूर्वक चलने से दिव्य पूर्णता, प्रबोधन तथा पूर्ण मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है।

२

सर्वोच्च आदर्शवादिता की जागृति

वसन्त नवरात्र का आयोजन हमने अभी सम्पन्न किया, जिसमें नौ दिनों पर्यन्त मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र जी की अवतार-लीला का अध्ययन करते रहे हैं। हम सबने **भगवान् रामचन्द्र जी के जन्म का आयोजन किया**। क्या आप उसके महत्त्व को समझते हैं? स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है कि जिस भक्तिभाव से हमने उस धर्मग्रन्थ का पारायण किया है, उसमें निहित भाव यही है कि भगवान् राम का आदर्श हमारे हृदय में जागृत हो। सारे दुःख, संघर्ष, झगड़े, अनैतिकता, अपवित्रता और आसुरी चरित्र जो इस समय सारे संसार में छाया हुआ है, उस रोग का

निवारण बस यही है। यही एक निवारण है, केवल एक ही सच्चा उपचार। केवल एक ही सच्ची कुंजी है।

और गुरुदेव ने हमें एक मूल स्वर दिया है "जैसा मनुष्य सोचता है, वह वैसा ही बन जाता है।" हमारे विचार ही कार्य-रूप में परिणत होते हैं। मन में उठे विचारों का बाह्य प्रकटीकरण ही क्रिया है। व्यक्ति पहले कुछ सोचता है, फिर उसका विचार उसे जिस प्रकार प्रेरित करता है, वही काम वह करता है। सारे संसार में मानवीय चरित्र, मानवीय आचार-व्यवहार, मानवीय क्रिया-कलापों का स्रोत विचार है। विचार है कुंजी, मनुष्य के जीवन और सदाचरण का मूल है विचार; क्रिया-प्रतिक्रिया, अन्योन्य प्रतिक्रिया का स्रोत भी यही विचार है। यदि विचारों पर ठीक से ध्यान दिया जाये, तो उसके परिणाम पर भी उचित ध्यान दिया जा सकेगा।

तुम किसी एक विचार का बीज बोते हो और उसकी क्रिया-रूप में फसल काटते हो। यदि तुम लगातार एक ही प्रकार की क्रिया करते रहोगे, उससे तुम्हारी वैसी ही आदत बन जायेगी। आदतों की पुनरावृत्ति से तुम्हारे चरित्र का निर्माण होता है। वर्तमान चरित्र पर तुम्हारा भविष्य निर्भर करता है। इस प्रकार मूल में विचार है; जो हम सोचते हैं, वही विचार ही क्रिया में परिणत होता है और क्रिया आदत में, आदत चरित्र में परिणत होती है, और चरित्र से तुम्हारा भविष्य बनता है।

मानव-मन का निरन्तर नवीनीकरण करते रहना चाहिए। सदा आदर्श विचारों की संरचना करते रहनी चाहिए। मनुष्य के मन-मस्तिष्क के अन्तर में छिपी उदात्त भावना, उदात्त प्रेरणा की रचना होते रहनी चाहिए। केवल तभी मानव-संसार, मानव-आचरण, मानव-चरित्र में परिवर्तन आ पायेगा। इसके लोकोत्तर आयामों से नया हो कर मानवीय चरित्र नये उत्कृष्ट

आयाम को प्राप्त करेगा। मनुष्य को जैसा दिव्य और ईश्वर का बालक होना चाहिए वैसा ही हो जायेगा। जब तक हम अपने विचारों में क्रान्ति नहीं लायेंगे, जब तक हमारे मन में हर दिन, हर क्षण आदर्शवाद पैदा नहीं होता, तब तक ऐसा होना असम्भव है।

आदर्शवाद को प्रतिदिन मानव-हृदय में उदित होने दो। आदर्शवाद को बार-बार मानव में उदित होने दो। यही एक उपाय है। यदि मानव-मन, मानव-स्वभाव, मानव-मस्तिष्क में इस मौलिक प्रयास का आरम्भ नहीं हो जाता, तो और सारे प्रयास असफल होने के लिए बाध्य हैं। अधम और दुष्ट विचार का परित्याग करके उत्कृष्ट विचार, महान् विचार, आदर्श भाव और शुद्ध प्रेरणा को लाने के लिए विवेकशील प्रोत्साहन और दृढ़ता के साथ प्रयास आवश्यक है। यही वास्तव में इसकी कुंजी है। मानव-मन में अहर्निश क्षण-क्षण में आदर्श भाव उदित हों!

यदि भीतर से मनुष्य आदर्श है, यदि मन उदात्त विचारों और आदर्शों पर विचार करता है, यदि मन आदर्श भावनाओं का सहारा लेता है, यदि सारे कार्यों के पीछे यह सभी अभिप्राय काम करते हैं, तब मनुष्य एक सच्चे मानव के रूप में व्यवहार करेगा। वह धरती पर देव-सदृश जीना आरम्भ कर देगा। तब मानव और मानव-समुदाय के संसार में एक नये युग का आरम्भ हो जायेगा। उसके पीछे यही आधार है कि मनुष्य कैसे सोचता है तथा किस प्रकार के भाव और मनोभाव उसके मन में उपजते हैं। यदि मानव-मन में आदर्शवाद को जीवित रखा जाये, तो यह सर्वोत्कृष्ट, महानतम, पवित्रतम गुण होगा।

जब आदर्शवाद लुप्त हो जाता है, तो मानव-संसार में अँधेरा छा जाता है। मानव का आन्तरिक मन अन्धकारमय हो जाता है, अधम और

भयानक विचारों को निर्मित करने वाला शिल्पगृह बन जाता है, तब मनुष्य धरती पर नरक का निर्माण कर लेता है। वह स्वयं अपने पतन और अपने विनाश का कारण बन जाता है। इसलिए हर प्रकार की सावधानी की कुंजी यही है। ध्यान दें, मन किस प्रकार कार्य कर रहा है, यह कैसे व्यवहार करता है, किस प्रकार के विचार पनप रहे हैं तथा उन विचारों का स्वरूप कैसा है। आदर्शवाद ही अकेला इन विचारों को उदात्त, उत्तम और आदर्श बना सकता है। केवल इसी प्रकार के साधनों से मनुष्य सौभाग्यशाली और आनन्दमय बन सकता है।

इसलिए मानव-मन में प्रतिदिन आदर्शवाद का जन्म होने दें। **मर्यादापुरुषोत्तम राम मानव-रूप में एक आदर्श मानव थे, वह आदर्श चरित्र वाले थे। उनकी जयन्ती मनाने का यही महत्त्व और सन्देश है कि आदर्शवाद को मन में प्रतिदिन प्रबलता के साथ सुखद रूप में, नये रूप में उपजने दें।** मानव-चरित्र, मानव-संघर्ष और मानव की अप्रसन्नता इत्यादि समस्याओं का यही एकमात्र उपचार है; क्योंकि मानव के गलत विचारों से ही ऐसी स्थिति उपजी है।

आपको सब बता दिया गया है। समाधान के संकेत आपको दे दिये गये हैं। **''यथेच्छसि तथा कुरु''** यह आप पर निर्भर करता है कि उस समाधान का लाभ उठाना चाहते हो या नहीं। यदि आप अच्छा संसार देखना चाहते हो, अच्छा मानव-समाज, संसार का अच्छा भविष्य देखना चाहते हो, तो बस एक ही रास्ता है : आदर्शवाद, उदात्त, उच्च, लोकोत्तर आदर्शवाद, नैतिक और आध्यात्मिक आदर्शवाद, मानवीय आदर्शवाद, मानव-मन में हर दिन, हर क्षण यह उपजना चाहिए। हमारा मानवीय विचार ही मानवीय भविष्य की कुंजी है। श्रोतव्य, मन्तव्य, निदिध्यासितव्य यही

सुना जाना चाहिए, इसी पर चिन्तन होना चाहिए, इसी पर मनन करना चाहिए।

३

अतुलित बल तथा विनय सम्पन्नता

भगवान् हनुमान् की पूजा करना एक ऐसा आदर्श है जो उनके प्रति ध्यानाकर्षण और श्रद्धा की अपेक्षा रखता है। वर्ष में एक दिन **हनुमान् जयन्ती** को ही नहीं, प्रत्युत् पूजा तो सदा ही करनी चाहिए। कर्तव्य और परम सत्ता के प्रति समर्पित शक्ति और पराक्रम के रूप में हनुमान् जी की पूजा वस्तुत: परम सत्य की पूजा है। हनुमान् जी की पूजा का अभिप्राय है विनय सहित शक्ति की पूजा, कर्तव्य-परायणता और भक्तिभाव के साथ शक्ति और पराक्रम की पूजा।

हनुमान् जी के महान् जीवन के भक्ति, समर्पण, विनय और कर्तव्य-परायणता इत्यादि आदर्शों के लिए तुम्हारी मान्यता ही हनुमत्पूजा है। हनुमान् जी की पूजा से पता चलता है कि तुम इन आदर्शों को अच्छा समझते हो। हनुमान् जी की पूजा उनके आदर्श के प्रति श्रद्धा, आत्म-समर्पण, सेवा, भक्ति, समर्पण और पूर्ण रूप से व्यक्तित्वहीन नि:स्वार्थपरकता का प्रतीक है। हनुमान् जी की पूजा उन सभी के लिए आदर्श है जो अपने जीवन में पूर्ण रूप से परिवर्तन लाना चाहते हैं तथा अपने भीतर हिम्मत और बल लाना चाहते हैं। उसके साथ-ही-साथ सेवा की भावना, पूर्ण रूप से भक्तिभाव और पूर्ण रूप से समर्पण की भावना और

उनके चरणों में श्रद्धा रख कर अपने-आपको उनका शिष्य, उनका अनुगामी और समर्पित सेवक बनाना चाहते हैं, उनमें वह सारे गुण आ जायेंगे।

यदि तुम अपने-आपको ईश्वर का समर्पित सेवक, ईश्वर का भक्त, ईश्वर का अनुगामी मानते हो, तो तुम्हें सदा अपने सामने रामायण के अतुलनीय व्यक्तित्व और उनके देदीप्यमान प्रकाशित आदर्शों को अपने सामने रखना चाहिए। उनमें इतनी शक्ति थी कि वह पर्वत को उठा सकते थे, उनमें इतनी अधिक शक्ति थी कि वह सागर को लाँघ सकते थे। पर इतना होते हुए भी वह अपने-आपको एक सामान्य व्यक्ति के रूप में दर्शाते रहे - एक समर्पित भक्तिभावपूर्ण व्यक्तित्व जो दिव्य सत्ता के सेवक थे। उन्हें सदा इसी रूप में चित्रित किया जाता रहा है कि वह सिर झुकाये करबद्ध दिव्य शक्ति के चरणों में बैठे हैं।

दिव्य सत्ता की विद्यमानता में हनुमान् जी का यही स्थान है, यही उनका व्रत है, यही उनका व्यक्तित्व है। अपने प्रभु के प्रति समर्पण, भक्ति, विनय और पूर्ण रूप से नि:स्वार्थ भाव के कारण ही वह ऐसा कर पाते हैं। यही कारण है कि वह सारे भक्तों में ईश्वर को सर्वाधिक प्रिय हो गये। इन उदात्त गुणों के कारण अपने-आपको मिटा देने वाले हनुमान् जी भारतीय संस्कृति में एक चिरस्थायी आदर्श स्वरूप हो गये हैं। वह भारत के कोटि-कोटि मनुष्यों के इष्टदेव हैं तथा रामायण के माध्यम से वाल्मीकि जी ने सारे मानवों की दृष्टि में उन्हें अमर, सदा विद्यमान, चिरंजीवी बना दिया है।

४

अन्तः परिवर्तन

आज श्री भगवान् बुद्ध की जयन्ती है; इसलिए हमें बुद्ध भगवान् के जीवन, उनके अनुभवों के प्रति आदर्श प्रतिक्रिया तथा उन्होंने जो स्मरणीय, युगान्तरकारी पथ ग्रहण किया, उसका चिन्तन करना चाहिए। अपने अन्दर गम्भीर परिवर्तन को लक्ष्य करके वह शान्त नहीं बैठे। वह व्यावहारिक योगी थे। हिम्मत के साथ आगे बढ़ कर त्यागी और जिज्ञासु बने, एक तपस्वी जिन्होंने ध्यान और योग का कठिन अभ्यास किया वह ज्ञानी और विश्व-गुरु बन गये।

ऐसा नहीं है कि व्यक्ति जीवन में जो-कुछ भी अनुभव करता है, उससे वह पुष्ट हो कर रूपान्तरित हो कर, ऊपर उठ कर उदात्त ऊँचाइयों तक पहुँच जाता है, प्रत्युत् उसे तो विचार और विवेक का सक्रिय रूप से प्रयोग करते रहना चाहिए। यह भी पर्याप्त नहीं है, उससे भी अधिक आवश्यक है अनुभव के प्रति सतर्क हो कर, सजीव हो कर उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते रहो, यही सच्चे जिज्ञासु के जीवन में अन्तः परिवर्तन का कारण बनता है।

न केवल आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रत्युत् सांसारिक-क्षेत्र में भी, और व्यापार-क्षेत्र में भी ऐसा घटित होता है कि यदि व्यापारी का बेटा जीवन में मूर्खता करेगा, तो वह कभी भी कुछ नहीं सीख सकता। बेटा यदि मूर्ख नहीं है, सूक्ष्म रूप से सब ध्यान से देखता रहता है, वह व्यापारिक संसार के सारे पाठ सीख सकता है। यदि वह उनके प्रति कोई प्रतिक्रिया प्रकट नहीं करता, तो वह सफल नहीं हो सकता। सफलता केवल उसे ही मिलती है जो ध्यान

दे कर सब देखता है, उन अनुभवों का मनन करता है, उनके ऊपर गहराई से प्रतिक्रिया व्यक्त करता है, उस पाठ का जीवन में प्रयोग करता है, सीख कर परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। इसी कारण व्यक्ति सफल व्यापारी बन कर, हो सकता है वह कभी करोड़पति भी बन जाये। यह इस पर निर्भर करता है कि व्यक्ति जिन अनुभवों में से गुजर रहा है, उनके प्रति सक्रिय हो कर जीवन्त रूप से उसके लिए प्रतिक्रिया करता है। उसके जीवन को रूपान्तरित होने के लिए निश्चित करने वाला कारण यही है।

बुद्ध भगवान् का जीवन हमें यही शिक्षा देता है। उन्होंने बड़े आश्चर्यजनक रूप से, बड़े जीवन्त रूप से, अपने जीवन की आरम्भिक अवस्था में ही प्रतिक्रिया व्यक्त की। बहुत कम आयु में अपने समय के बड़े प्रबुद्ध और प्रदीप्त गुरु बन गये तथा मानव-इतिहास में वह एक अमर व्यक्तित्व हो गये। यद्यपि दो हजार पाँच सौ वर्ष पहले उनका जन्म हुआ था; पर आज भी उनकी शिक्षाओं का, उपदेशों का करोड़ों की संख्या में उनके बौद्ध भक्तों के द्वारा अनुसरण हो रहा है। पूर्व से ले कर पश्चिम तक विश्व में सभी उनका स्मरण करते हैं।

अनेक अनुभवों में से गुजर कर उन्होंने जीवन का सामना किया और जीवन्त रूप से उनके प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी, यह उसी का परिणाम है। आप इसे अच्छी तरह से आत्मसात् कर लें, इस पर गहराई से चिन्तन कर लें। बुद्ध जयन्ती के अवसर पर इस प्रकार से उत्सव मनाने का यही लाभ है। आप सब भगवान् बुद्ध के जीवन को जानने के लिए विशेष अध्ययन करें कि, उनकी शिक्षाओं का आशय क्या है, हमारे लिए उनका सन्देश क्या है? ईश्वर करे, हम उनके उदात्त और उत्कृष्ट आदर्शों तथा उनके जीवन और उनकी शिक्षाओं का पालन कर सकें!

५

शाश्वत सत्य की पुष्टि

आदि शंकराचार्य को इस संसार ने एक सबसे महान् सत्य की प्राप्ति करने वाली आत्मा और दार्शनिक के रूप में प्रस्तुत किया है। आठ वर्ष की छोटी-सी आयु में त्याग की भावना और सत्य की प्राप्ति के लिए घर छोड़ दिया। केवल कुछ ही वर्षों में कल्पनातीत रूप से अपने जीवन-लक्ष्य को पूर्ण किया। बत्तीसवें वर्ष में उनका महाप्रयाण हो गया। उस काल में उन्होंने जो-कुछ भी किया, उसे दिग्विजय के रूप में माना जाता है। अपने विश्वसनीय अकाट्य तर्कों के आधार पर उन्होंने दर्शन के सारे छोटे-छोटे मतवादों को पराजित करके हाथ में अद्वैत वेदान्त का झण्डा ले कर पूर्ण एकात्मवाद का सर्वोच्च दर्शन भारत की चारों दिशाओं में स्थापित कर दिया। उनके इस सिद्धान्त के प्रतिपादन के बारह सौ वर्षों के बाद आज भी उसका कल्पनातीत कार्य सक्रिय रूप से जीवन्त हो कर उत्तरोत्तर प्रगतिशील हो रहा है।

स्वयं को नाम-रूप युक्त, आदि-अन्त सहित, जन्म, जरा, मृत्यु, रोग, क्षय, दुःख, क्लेश आदि अवस्थाओं से युक्त परिवर्तनशील विषय मान बैठने की भूल को सुधारना और अपने दिव्य, शाश्वत, मूल स्वरूप का ज्ञान करना ही वेदान्त का सार है। दृढ़ता के साथ इस गलत धारणा को नकारना और उसके साथ-साथ दृढ़ता के साथ यह भी स्वीकार करना कि तुम शाश्वत, अपरिवर्तनशील हो, तुम्हारी पहचान दिव्य है। अद्वैत वेदान्त-साधना का मूल सार यही है।

शंकर की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक 'विवेकचूड़ामणि' है। यह आत्मा-अनात्मा के मध्य में विवेक का आह्वान है। आत्मा सत् है (पूर्ण अस्तित्व) अनात्मा का आभास मात्र है। यह समय में अल्पकालिक है, दिक्काल में सीमित है, नश्वर है; यह क्षर पुरुष (नश्वर आत्मा) है। आत्मा अक्षर पुरुष है (अनश्वर आत्मा) **''अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे''** (अजन्मा, शाश्वत, अपरिवर्तनशील और सनातन, जब शरीर मरता है, तब आत्मा नहीं मरती)। इस प्रकार 'विवेकचूड़ामणि' एक अधिकृत रचना है और आत्मा-अनात्मा के विवेक की एक साधना है।

और उनकी दूसरी पुस्तक है 'आत्मबोध' जिसमें 'आत्मा क्या है', इस पर प्रकाश डाला गया है, जिससे आत्मा-अनात्मा का विवेक प्राप्त होता है। अनात्मा को जान कर ही तुम उसे नकार सकते हो। तुम उससे भ्रमित नहीं होगे। अनात्मा के स्वभाव को जानने पर तुम अपने-आपको भ्रम के परदे से मुक्त कर लोगे। उसके पश्चात् तुम सत्य में स्थित हो जाओगे, उसमें दृढ़ता के साथ स्थिर हो जाओगे, सोचने योग्य रहने के लिए उस पर चिन्तन-मनन और ध्यान करने के लिए, तथा अपनी चेतना में वास्तविक जागरूकता जगाने के लिए, आत्मा क्या है उसका विस्तृत ज्ञान, और महत्त्व इस पुस्तक में निहित है। इस सीमा तक 'आत्मबोध' तुम्हें रास्ता दिखा सकती है कि धीरे-धीरे ईश्वर से तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर मिलता है : **''तमसो मा ज्योतिर्गमय''** और **''धियो यो नः**

प्रचोदयात्'' ('अन्धकार से प्रकाश की ओर चलो' और 'कृपया वह हमारी बुद्धि को प्रकाशित करें')।

गुरुदेव बार-बार दुहराते थे ''तुम एक अमर आत्मा हो। तुम यह शरीर, यह मस्तिष्क नहीं हो। ये सब उपाधियाँ हैं, सीमित तात्त्विक गुण हैं जिन्हें कुछ समय के लिए तुम्हारे साथ जोड़ दिया गया है। वह तुम्हारे महत्त्वहीन व्यक्तित्व का एक भाग हैं। तुम्हारी इहलोक की चेतना है, पर तुम तो उससे भी बहुत अधिक हो, उससे भी श्रेष्ठ एक दिव्य व्यक्तित्व। मानव से परे एक आध्यात्मिक सत्य जो समय और दिक्काल से अछूता है, वह कष्टों, दु:खों और वेदना से प्रभावित नहीं है।''

इसे सुनना चाहिए, इस पर चिन्तन करना चाहिए और इस पर ध्यान करना चाहिए। तुम्हें अपना पूरा ध्यान इसके अभ्यास की ओर मोड़ देना चाहिए जो तुम्हें मुक्ति दिला सकता है। इसी सत्य के कारण हमारे अन्दर यह भावना पैदा होती है कि शाश्वत, सार्वजनीन सत्य, परमात्मा के साथ हमारा सम्बन्ध है। तुम्हें अपनी मूलभूत अमर और अनश्वर दिव्य पहचान की दीप्तिमान आन्तरिक जागृति से प्रदीप्त हो जाना चाहिए।

अद्वैताचार्य जगद्गुरु आदि शंकराचार्य जयन्ती दिवस पर यही प्रार्थना है कि आपको अपनी चेतना के उत्थान में सफलता मिले। आज की सामान्य, नीरस-सी मानव की सांसारिक चेतना उदात्त और महान् उच्च आध्यात्मिक स्तर की दिव्य चेतना में बदल जाये।

६

दिव्य अवतरण

जैसे-जैसे **श्री कृष्ण जन्माष्टमी का शुभ दिन** समीप आता जा रहा है, वैसे-वैसे हम भी दिव्य आगमन की ओर बढ़ रहे हैं। वह अपने में असाधारण है। असाधारण इस रूप में है; क्योंकि वहाँ हर प्रकार के खण्डनात्मक और अकल्पनीय तत्त्व दोनों एक-साथ मिल कर आ रहे हैं, क्योंकि परम परमेश्वर आदि नारायण स्वयं भगवान् कृष्ण के रूप में आने वाले हैं। हमें सन्देह होता है कि जब श्री कृष्ण का आगमन हुआ, उस समय चारों ओर देवत्व से हीन, सब तरफ तामसिक और राजसिक वृत्तियाँ, सब-कुछ अनाध्यात्मिक और आसुरी वृत्तियाँ भरी पड़ी थीं। तब ऐसा दिव्य क्यों और कैसे घट सका!

दूसरी ओर ऐसा कहा जाता है कि जब भगवान् बुद्ध का आगमन हुआ, उस समय सब-कुछ सुन्दर और धार्मिक हो गया था। यद्यपि उस समय फूलों के खिलने का मौसम नहीं था, फिर भी वृक्ष फूलों से लद गये तथा जिन वृक्षों पर फल आते थे, वह पूरी तरह से फलों से भर गये। सरोवरों में कमल खिल उठे। नदियों का पानी जो मटमैला था, वह पारदर्शक स्वच्छ हो गया था। सभी ओर सुगन्धित ठण्ढी हवाएँ चल रही थीं। सब-कुछ धार्मिक, सब-कुछ सुन्दर **'सत्यं शिवं सुन्दरम्'** हो गया था। भगवान् राम का जन्म भी जब हुआ था, तब भी आश्चर्यजनक धार्मिक वातावरण हो गया था।

पर भगवान् कृष्ण का जब जन्म हुआ, उस समय की परिस्थितियाँ बहुत विपरीत थीं, चारों ओर दिव्यता से हीन, बहुत ही अनाध्यात्मिकता व्याप्त थी। उनका जन्म कारागार में हुआ। उनके माता-पिता दोनों को दीवारों के साथ बेड़ियों से बाँधा हुआ था। उनके हाथ भी हथकड़ियों से बँधे थे। सबसे दूर हटा कर उनको कारागार की बन्द कोठरी में रहना पड़ा था। उस पर ताला पड़ा रहता था तथा बड़े ही निर्दयी रक्षक वहाँ की पहरेदारी करते रहते थे। श्रावण मास की घनी अँधियारी मेघाच्छादित अर्ध रात्रि थी, घनघोर वर्षा हो रही थी। भगवद्गीता में जो-कुछ अमंगल बताया गया है रात्रिकाल, कृष्ण पक्ष, सूर्य का दक्षिणायन होना वह सभी लक्षण उस समय थे।

उस समय भगवान् कृष्ण को सब प्रकार से अमंगल का सामना करना पड़ा। फिर ऐसी सारी अमांगलिक परिस्थितियों में भी एक यशस्वी दिव्य उपलब्धि थी। सारी विपरीत स्थितियाँ, उस समय सारी आसुरी शक्तियों पर विजय पाने के लिए, उनका अन्त करने के लिए भगवान् का आगमन हुआ। ध्यान देने योग्य सबसे महत्त्व की एक बात यह थी कि दारुण अमंगल, विपरीत, आसुरी, अँधियारी परिस्थितियाँ होने पर भी, जिन्हें निराशाजनक भी कह सकते थे, देवकी और वासुदेव का विश्वास कभी नहीं डगमगाया।

वे पूर्ण रूप से निश्चिन्त थे कि अब तक जो-कुछ विपरीत रहा है, वह दैवी आगमन से सब-कुछ पूरी तरह से ठीक हो जायेगा। उनके मन में परम श्रद्धा थी। उनके हृदय में महान् विश्वास था। दैवी आश्वासन के प्रति पूर्ण विश्वास और श्रद्धा थी। उन्होंने सारी विपरीत स्थितियों को उसी के सहारे सहन किया। उनका विश्वास कभी डगमगाया नहीं। उन्हें ईश्वर में पूर्ण

विश्वास था। उसी ने सारी दु:ख की परिस्थितियों में संघर्ष करने के लिए अविचल रखा। अन्तत: सौभाग्य से उन्हें मुक्त होने का अवसर प्राप्त हुआ। भगवान् के हाथों से ही वे बन्धन-मुक्त हुए।

हो सकता है कि यह एक संकेत है कि मानव को, आध्यात्मिक साधक को, भक्त को, ईश्वर-प्राप्ति की इच्छुक आत्मा को किस प्रकार दृढ़ विश्वास में सुस्थिर हो जाना चाहिए। चाहे कितनी ही विपरीत परिस्थितियाँ क्यों न हों, चाहे कितने ही निराशाजनक लक्षण क्यों न हों, फिर भी दृढ़ता के साथ यदि ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखते हो, उनके प्रति श्रद्धा, भक्ति तथा दैवी आदेश का पालन करते हो, तो विजय तुम्हें ही मिलेगी। तुम सारी बाधाओं को पार करके मुक्त हो कर भगवद्-स्वरूप प्राप्त कर लोगे। भगवान् कृष्ण को स्वयं कारागार में आना पड़ा। बेड़ियों को काट कर उन्हें मुक्त कर दिया। कृष्णावतार की यही विशेषता है। आरम्भ से ले कर अन्त तक वे असाधारण रहे।

पूर्णावतार सर्वोच्च स्वामी, जिनका जन्म विपरीत परिस्थितियों में हुआ, महान् विपत्ति और संकट की काली अँधेरी रात, सब पर विजय पा कर वे आये। उन्होंने बन्धन में रहने वाले अपने माता-पिता को बन्धन-मुक्त किया। ईश्वर करे, इस दैवी कृपा की वर्षा आपके ऊपर भी हो तथा आपको उनका आशीर्वाद प्राप्त हो ! अन्धकार से प्रकाश की ओर, असत् से सत् की ओर, मृत्यु से अमृतत्व की ओर जाने वाली आपकी यात्रा में आपको सफलता मिले ! यही मेरी विनीत प्रार्थना है।

७

मंगल शुभारम्भ

आज श्री गणेश चतुर्थी का दिन किसी कार्य के शुभारम्भ के लिए अत्यन्त मांगलिक दिन है। भगवान् श्री गणेश को समर्पित करने का दिन है, वे कार्यारम्भ में आने वाली सारी बाधाओं को दूर करने वाले देव हैं। वे सिद्धिदायक हैं। यदि तुम सही दिशा में कार्य करते हो, तो वे सफलता प्रदान करते हैं। इसलिए माना जाता है कि विजयादशमी के समान, कोई काम प्रारम्भ करने के लिए आज का दिन बहुत ही मांगलिक, बहुत ही उपयुक्त दिन है। हम अपने भाव, विचार और कर्म की सारी अनुचित क्रियाओं और व्यवहार को रोक कर, सारी क्रियाएँ जो प्रतिकूल हैं, उन्हें रोक कर शुभ आरम्भ करेंगे। वे कहते हैं **''तदुदितं कर्म स्वानुष्ठियताम्''** (हमें वेदों के निर्देशानुसार कार्य करने चाहिए)। इस निर्देश में छिपा हुआ सत्य यह है कि हमें उसके विरुद्ध कुछ नहीं करना चाहिए। 'सच बोलो' का अर्थ यही है कि झूठ मत बोलो, यह उसमें निहित है। शाकाहारी बनो, इसका अर्थ यही है कि निरामिष भोजन, मांस का सेवन बन्द करो। आज उपवास है, इसका अर्थ कुछ खाना नहीं है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। यह इसमें निहित है। एक में दूसरा अर्थ निहित है। ईश्वरीय दिव्य गुण तुम्हें मुक्ति की ओर ले जाते हैं **''दैवी सम्पद् विमोक्षाय।''** यदि जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मुक्ति है, तब मुक्ति की ओर ले जाने वाली केवल दैवी सम्पद् का ही अभ्यास हमें नहीं करना है, अपितु हमें सारी आसुरी सम्पद् का त्याग कर देना चाहिए; क्योंकि उसका कहना है कि आसुरी सम्पद् बन्धन का कारण

बनती है। इसलिए हमें केवल दिव्य गुणों का विकास ही न करके धीरे-धीरे बड़ी सावधानी से विरोधी गुणों को भी दूर करने का प्रयास करना चाहिए। यह भाव इसमें निहित है।

गुरुदेव ने अपनी पुस्तक 'सत्संग भवन लैक्चर्स' (Satsanga Bhavan Lectures) में कहा है : ''आज आपको मैं ईश्वरोपलब्धि के एक सरल पथ के विषय में बताऊँगा। तीन सरल साधनाएँ आपको मुक्ति दिला सकती हैं पहली साधना है अपने नकारात्मक अनाध्यात्मिक अवगुणों का नाश करो और सकारात्मक आध्यात्मिक गुणों का विकास करो। अपने सारे व्यावहारिक कार्य करते हुए निरन्तर ईश्वर का ध्यान करना दूसरी साधना है। और तीसरी है अपनी सारी क्रियाओं को ईश्वर के चरणों में समर्पित कर देना।'' इस प्रकार पहली साधना अपने नकारात्मक आसुरी अवगुणों का नाश तथा सकारात्मक दैवी गुणों का विकास करना है।

इसलिए आज के मांगलिक दिन, बाधाओं को दूर करके सफलता दिलाने वाले भगवान् गणेश की आराधना करते हुए हमें अपने अवगुणों का नाश करके उच्च उदात्त दिव्य गुणों, आध्यात्मिक सद्गुणों का विकास करना चाहिए। अपनी 'विश्व-प्रार्थना' में गुरुदेव ने कहा है : ''हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।'' यदि हम ऐसा करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, तब हमें भी अपने अन्दर दैवी गुणों का विकास करके सहयोग करना है, तभी वे हमारी सहायता करके सफलता दिलवायेंगे।

कौन-से अवगुणों का नाश करना है? कौन-से दिव्य गुणों का विकास करना है ? महान् पवित्र देवी शारदामणि जी, दक्षिणेश्वर के भगवान् श्री रामकृष्ण परमहंस देव की दैवी पत्नी हमें परामर्श देती हुई कहती हैं :

''मेरे प्यारे बच्चो, दोष-दृष्टि की भावना अपने अन्दर से निकाल कर फेंक दो। दूसरों में कमियाँ खोजने की इस नकारात्मक आदत का नाश कर दो। जीवन बड़ा छोटा है। हमारे अपने दोष दूर करने के लिए ही समय नहीं है। हमारे अन्दर इतने दुर्गुण हैं, यदि हम उन पर विचार करके उनका विश्लेषण करके उन्हें पहचानना आरम्भ कर दें कि हममें कौन-कौन-से दुर्गुण हैं। उसके लिए हमें पूरा समय देना पड़ेगा। यहाँ तक कि जो दुर्गुण हम सबमें हैं, हमारा पूरा जीवन भी उनको खोज नहीं पायेगा। यदि तुम अपना मन साफ न करके दूसरों के दोष ढूँढ़ते रहोगे, तब तो तुम वहीं-के-वहीं रहोगे जहाँ तुम थे।''

तुम अपना ध्यान जिस पर केन्द्रित करते हो, वैसे ही बन जाते हो। यदि तुम मूर्खतापूर्ण ढंग से सोच कर दूसरों के नकारात्मक गुणों पर ध्यान देते हो, तो अपने को सुधारने के स्थान पर अपने-आपको वैसा ही बना लोगे। तुम अपनी दृष्टि को महत् बनाने की अपेक्षा उसे अल्प बना लेते हो। यह बहुत बड़ी भूल है।

इसलिए आज पवित्र विनायक चतुर्थी के दिन पावन माँ शारदामणि देवी से संकेत ग्रहण करें। वो कहती हैं : ''ओ परमेश्वर! मुझे दिखाया तो गया है, फिर भी मैंने अब तक अनुभव नहीं किया है कि यह एक बाधक तत्त्व है, क्योंकि यह मेरे स्वभाव का हिस्सा बन चुका है। मुझे अपने स्वभाव की इस वृत्ति से छुटकारा पाने के लिए अपनी दूसरी वृत्ति को बदल कर अपनी मूलभूत दैवी वृत्ति में स्थापित हो जाना चाहिए। इसलिए आज से मैं दूसरों के दोष-दर्शन न करने के स्वभाव का विकास करूँगी। मैं अपने मानवीय अस्तित्व के केन्द्रीय लक्ष्य से अपने-आपको हटने की अनुमति

नहीं दूँगी। मन की इस पुरानी हठीली वृत्ति से मुझे वशीभूत नहीं होना है। अब से मैं इस भूल की पुनरावृत्ति नहीं करूँगी। जो मेरे आध्यात्मिक विकास का अंग नहीं है, ऐसे किसी भी विषय के लिए मैं माया को अपना मार्गदर्शन नहीं करने दूँगी। ओ ईश्वर! मेरे इस उद्देश्य के लिए मेरी रक्षा कीजिए।''

इसलिए प्रत्येक दिन तुम्हें अपने को जगाना है। जीवन का जो प्रमुख लक्ष्य है, जिसके लिए तुम इस जग में आये हो, उसके प्रति चिन्तित रहना चाहिए। भगवान् गणेश जी तुम्हें अपने जीवन में सारी बाधाएँ दूर कराने में सहायक हों !